पाठ - 4

G7RL7B

चाणक्य

मित्र इस कुश को खोदकर उसमें मट्ठा क्यांे डाल रहे हो ? 'इसका काँटा मेरे पैर में घुस गया। मैंने काँटा तो निकाल लिया, किन्तु यह फिर किसी के पैर में न चुभे इसलिए इसे जड़ से नष्ट करना चाहिए।' - यह वार्तालाप चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य के बीच का है

भारतीय इतिहास और राजनीति में चाणक्य का विशिष्ट स्थान है। शासन के विविध पहलुओं का जैसा सारगर्भित विवेचन उनके ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' में है वैसा सम्भवतः विश्व के प्राचीन और

आधुनिक किसी भी राजनीतिशास्त्र के विचारक ने नहीं किया है। अतः चाणक्य की गिनती विश्व के राजनीति शास्त्र के महानतम चिन्तकों में की जाती है।

चन्द्रगुप्त और चाणक्य

चन्द्रगुप्त के मौर्य साम्राज्य की स्थापना के साथ चाणक्य का नाम जुड़ा है। चाणक्य की सहायता, परामर्श एवं राजनीतिक कूटनीति से चन्द्रगुप्त अपने साम्राज्य का विस्तार करने में सफल हुआ। चाणक्य का पूरा नाम 'विष्णु गुप्त चाणक्य' था। उन्हें कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है। चाणक्य तक्षशिला के एक ब्राह्मण के पुत्र थे। बाल्यकाल में ही पिता की मृत्यु हो जाने पर चाणक्य का पालन-पोषण उनकी माता ने किया। तक्षशिला में रहकर उन्हांेने ज्ञानार्जन के साथ-साथ दर्शन का भी अध्ययन किया। चाणक्य परम विद्वान थे परन्तु बहुत क्रोधी एवं उग्र स्वभाव के थे।

युवा होने पर चाणक्य जीविकोपार्जन के लिये मगध साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र पहुँचे। वहाँ मगध के नन्दवंशीय शासक घनानन्द से उनकी भेंट हुई। सम्राट ने चाणक्य को

पाटलिपुत्र की दानशाला का प्रबन्धक नियुक्त किया। कटु और उग्र स्वभाव होने के कारण चाणक्य को वहाँ से पदच्युत कर दिया गया। उन्होंने इसे अपना अपमान समझा और सम्राट घनानन्द तथा नन्द वंश के विनाश करने की प्रतिज्ञा ली। वह सदैव इस खोज में रहते कि प्रतिज्ञा कैसे पूरी करें। उसी समय उनकी भेंट चन्द्रगुप्त से हुई।

चन्द्रगुप्त मगध राज्य में राज्याधिकारी और सेनानायक था। वह बहुत महत्वाकांक्षी था। वह मगद्द साम्राज्य पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहता था। चन्द्रगुप्त और चाणक्य की भेंट रास्ते में हुई। कुश में मठ्ठा डाल रहे चाणक्य को देखकर चन्द्रगुप्त उनके दृढ़ निश्चय से प्रभावित हुए और उन्होंने चाणक्य को अपना सहयोगी बना लिया। इस मित्रता ने भारतीय इतिहास को एक नवीन दिशा की ओर मोड़ दिया। चन्द्रगुप्त में बल था और चाणक्य में बुद्धि। बल और बुद्धि का यह संयोग भारतीय इतिहास में युग परिवर्तन की घटना सिद्ध हुआ।

चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने मिलकर पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया। घनानन्द की प्रबल सैन्य शक्ति के कारण वे पराजित हुए। साम्राज्य की शक्ति सदैव केन्द्र में स्थित रहती है और सीमान्त क्षेत्र में क्षीण। चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने अपनी रणनीति में परिवर्तन करके यह निर्णय लिया कि पहले मगध राज्य के सीमान्त क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की जाय तत्पश्चात् मगध राज्य पर आक्रमण करना उचित होगा।

इस नवीन योजना के अनुसार चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने पंजाब पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त की। इसके पश्चात चन्द्रगुप्त एक विशाल सेना लेकर पाटलिपुत्र पहुँचा। इस युद्ध में घनानन्द मारा गया। चन्द्रगुप्त ने चाणक्य की सहायता से मगध पर अधिकार प्राप्त कर लिया। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त का विधिवत राज्याभिषेक कर 321 ई.पू. में उसे मगध का सम्राट घोषित कर दिया। चाणक्य की बुद्धिमत्ता और कूटनीति के कारण चन्द्रगुप्त ने उन्हें अपना प्रधानमंत्री और प्रमुख परामर्शदाता नियुक्त कर लिया। चाणक्य ने जीवन के अन्तिम समय तक मौर्य साम्राज्य की सेवा की।

चाणक्य ने राजतंत्र को एक सर्वाधिक उपयोगी संस्था माना है। उनके अनुसार राजा को धर्मनिष्ठ, सत्यवादी, कृतज्ञ, बलशाली, वृद्धों का सम्मान करने वाला, उत्साही, विनयशील, विवेकी, निर्भीक, न्यायप्रिय, मृदुभाषी तथा कार्य निपुण होना चाहिए। उसे काम-क्रोध, मद-मोह, अहंकार ईर्ष्या-द्वेष आदि दुर्गुणों से दूर रहना चाहिए। इस प्रकार राजा में न केवल राजा के ही गुण वरन् श्रेष्ठ व्यक्तियों के सभी गुण होने चाहिए।

चाणक्य के अनुसार राज्य का यह कर्तव्य है कि आकस्मिक और प्राकृतिक आपदाओं से नागरिक की रक्षा करे। राज्य को अपंग, शक्तिहीन, वृद्ध, रोगी और दीन-दुखियों का पालन-पोषण करना चाहिए। राज्य को शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। राज्य का यह कार्य है कि साहूकार, व्यापारी, जादूगर, शिल्पी, नट, शासकीय अधिकारी और कर्मचारी आदि के

शोषण-उत्पीड़न से प्रजा की भली-भाँति रक्षा करे। व्यापारी अनुपयुक्त दर से क्रय-विक्रय न कर सकें, इसके लिये राज्य को चाहिये कि वे नियम निर्धारित करे।
राज्य के इन कार्यों से विदित होता है, कि चाणक्य ने आधुनिक लोक कल्याणकारी राज्य की कल्पना कर ली थी। उन्होंने प्रजाहित को राज्य का लक्ष्य मान लिया था। वे स्वयं वर्षा न होने के कारण अकाल के समय सैकड़ों साधुओं को नित्य भोजन कराते थे।
चाणक्य एक व्यवहार कुशल राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने नीति पर भी एक पुस्तक लिखी है। उसमें उनके ऐसे विचार हैं, जिनसे पता चलता है कि मौर्य साम्राज्य के निर्माता के रूप में वे सफल रहे। उन्होंने राजतंत्र के समर्थक होते हुए भी, निरंकुश स्वेच्छाचारी शासन का विरोध किया।
चाणक्य आज भी आधुनिक राजनीतिज्ञ, विचारकों, चिन्तकों में अग्रणी माने जाते हैं।
अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. चाणक्य का पूरा नाम क्या था ? उन्हें किन नामों से जाना जाता है ?

2. नन्दवंशीय शासक घनानन्द ने चाणक्य को किस पद पर नियुक्त किया ?

3. चाणक्य की नयी रणनीति के अनुसार चन्द्रगुप्त के मगध पर आक्रमण करने का क्या परिणाम हुआ?

4. चाणक्य के अनुसार राजा में कौन-कौन से विशिष्ट गुण होने चाहिए ?

5. दिये गये वाक्यों में से सही उत्तर छाँटिए -

(क) चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की बुद्धिमत्ता और कूटनीति के कारण -

Û चाणक्य को अपना परामर्शदाता नियुक्त किया।

Û चाणक्य को अपना अमात्य (मंत्री) नियुक्त किया।

Û चाणक्य को अपना 'महामात्य' (प्रधानमंत्री) नियुक्त किया।

(ख) चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्याभिषेक -

Û 298 ई0पू0किया।

Û 312 ई0पू0किया।

Û 321 ई0पू0किया।

योग्यता विस्तार -

भारत के मानचित्र में बिहार राज्य में मगध, पाटलिपुत्र (पटना) नालन्दा और तक्षशिला ढूँढिए। जानकारी प्राप्त कीजिए कि नालन्दा और तक्षशिला क्यों प्रसिद्ध हैं ?